इस्लाम की विशेषता

लेखक

शैखुल इस्लाम मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब

अनुवाद

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

संशोधन

शफीकुर्रहमान ज़ियाउल्लाह मदनी

islamhouse.com

1429-2008

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ जो अति मेहरबान और दयालू है।

इस्लाम की विशेषता

अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿ الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلامَ دِيناً ﴾ (المائدة: ٣)

"आज मैं ने तुम्हारा धर्म सम्पूर्ण कर दिया, और अपनी नेमतें तुम पर पूरी कर दीं और इस्लाम को तुम्हारे लिए धर्म स्वरूप पसन्द कर लिया।" (सूरतुल माईदा:३)

तथा फरमाया:

﴿ قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنْ كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِنْ دِينِي فَلا أَعْبُدُ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ أَعْبُدُ اللَّهَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُمْ ﴾ (يونس: ١٠٤)

"आप कह दीजिए कि ऐ लोगो! यदि तुम मेरे धर्म के प्रति सन्देह में हो, तो मैं उन की उपासना नहीं करता जिन की तुम अल्लाह को छोड़ कर उपासना करते हो, किन्तु मैं उस अल्लाह की उपासना करता हूँ जो तुम्हारी जान निकालता है।" (सूरत यूनुसः१०४)

तथा अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَآمِنُوا بِرَسُولِهِ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيَجْعَلْ لَكُمْ نُوراً تَمْشُونَ بِهِ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴾
(الحديد:٢٨)

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो और उस के पैग़म्बर पर ईमान लाओ, अल्लाह तुम्हें अपनी रहमत (कृपा) का दोहरा भाग देगा, और तुम्हें नूर -प्रकाश- प्रदान करे गा, जिसके प्रकाश में तुम चलो फिरो गे, और तुम्हारे गुनाह भी क्षमा कर देगा, और अल्लाह क्षमा करने वाला दयालू है।" (सूरतुल हदीदः२८)

सहीह बुख़ारी में अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"तुम्हारा उदाहरण और यहूदियों और ईसाईयों का उदाहरण उस आदमी के समान है जिस ने मज़दूरी पर कुछ मज़दूर रखे और कहा कि कौन सुबह से दूपहर तक मेरा काम एक क़ीरात पर करे गा? तो यहूद ने किया। फिर उस ने कहा कि कौन दूपहर से अस्र की नमाज़ तक मेरा काम एक क़ीरात पर करे गा? तो ईसाईयों ने किया। फिर उस ने कहा कि कौन अस्र की नमाज़ से लेकर सूरज डूबने तक मेरा काम दो क़ीरात पर करे गा? तो वह तुम लोग हो। इस पर यहूद और ईसाई क्रोधित हो गए और कहा कि यह क्या बात हुई काम हम अधिक करें और मज़दूरी कम मिलें? उस ने कहाः क्या मैं ने तुम्हारा कुछ हक़ मार लिया है? वह बोलेः नहीं, तो उस ने कहा कि यह तो मेरा फ़ज़्ल -कृपा- है जिसे चाहूँ दूँ।"

तथा सहीह बुख़ारी में अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह बयान करते हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"अल्लाह तआला ने हम से पहले लोगों को जुमा (की फज़ीलत) से वंचित रखा, चुनांचे यहूदियों के

भाग में शनिवार का दिन आया और ईसाईयों के भाग में रविवार का, फिर अल्लाह तआला हमें लाया और जुमा के दिन का मार्गदर्शन किया, और इसी प्रकार वह क़ियामत के दिन भी हम से पीछे होंगे, हम दुनिया वालों में तो सब से अन्तिम समुदाय हैं, किन्तु क़ियामत के दिन सब से आगे होंगे।''

और सहीह बुखारी में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से तालीक़न वर्णित है कि आप ने फरमायाः

''अल्लाह के निकट सब से पसन्दीदा धर्म, सरल मिल्लते इब्राहीम है।''

उबै बिन कअब रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, उन्हों ने फरमायाः

''तुम लोग सुन्नत और सिराते मुस्तक़ीम -सीधे मार्ग- पर चलते रहो, क्योंकि ऐसा नहीं हो सकता कि कोई व्यक्ति सुन्नत और सिराते मुस्तक़ीम पर रह कर अल्लाह का ज़िक्र करे और अल्लाह के डर से उसकी आँखें आँसू बहाऐं और फिर उसे जहन्नम की आग छू ले, और जो भी व्यक्ति सुन्नत और सिराते मुस्तक़ीम पर गमन हो कर अल्लाह का ज़िक्र

करे, फिर अल्लाह के डर से उसके रोंगटे खड़े हो जाऐं, तो इस का उदाहरण उस वृक्ष के समान है जिस के पत्ते सूख चुके हों और सहसा आँधी आए और उस के पत्ते झड़ जाएं, इसी प्रकार उस व्यक्ति के गुनाह भी झड़ जाते हैं जिस प्रकार उस वृक्ष के पत्ते झड़ जाते हैं, सिराते मुस्तक़ीम और सुन्नत के अनुसार की हुई थोड़ी उपासना भी, सिराते मुस्तक़ीम और सुन्नत के विरूध की हुई अधिक उपासना से उत्तम है।''

अबुद-दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, उन्हों ने फरमायाः

''बुद्धिमानों का सोना और उनका खाना-पीना क्या ही अच्छा है, ये मूर्खों की रतजगाई और उन के रोज़ों पर किस प्रकार प्रधानता ले जाते हैं, तक़्वा और यक़ीन के साथ कण बराबर नेकी, धोखे से पीणित लोगों की पहाड़ बराबर उपासना से कहीं अधिक महानता, विशेषता और वज़न रखती है।''

इस्लाम को स्वीकार करना अनिवार्य है

अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿ وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلامِ دِيناً فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ﴾ (آل عمران:٨٥)

"जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त कोई अन्य धर्म ढूँढ़े तो उसका धर्म कदापि स्वीकार नहीं किया जाए गा, और वह प्रलोक में घाटा उठाने वालों में से होगा।" (सूरत आल-इम्रानः८५)

तथा अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿إِنَّ الدِّينَ عِنْدَ اللَّهِ الْإِسْلامُ﴾ (آل عمران: ١٩)

"निःसन्देह अल्लाह के निकट धर्म इस्लाम ही है।" (सूरत आल-इम्रानः१६)

तथा फरमायाः

﴿وَأَنَّ هَذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيماً فَاتَّبِعُوهُ وَلا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ﴾ (الأنعام: ١٥٣)

''और यही धर्म मेरा मार्ग है जो सीधा है, अतः इसी मार्ग पर चलो, और दूसरी पगडण्डियों पर न चलो कि वह तुम्हें अल्लाह के मार्ग से अलग कर दें गी, इसी का अल्लाह तआला ने तुम को आदेश दिया है तकि तुम परहेज़ गार (संयमी, ईश-भय रखने वाले) बनो।'' (सूरतुल-अनूआमः१५३)

मुजाहिद कहते हैं कि इस आयत में पगडण्डियों से अभिप्राय ''**बिदआत एंव सन्देह**'' हैं।

आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा से वर्णित है कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

''जिस ने हमारे इस धर्म में कोई ऐसी चीज़ निकाली जो धर्म से नहीं है तो वह मर्दूद (अस्वीकृत) है।''
(बुखारी एंव मुस्लिम)

एक दूसरी रिवायत में हैः

''जिस ने कोई ऐसा काम किया जिस पर हमारा आदेश नही है तो वह काम मर्दूद (अस्वीकृत) है।''
(सहीह मुस्लिम)

सहीह बुख़ारी में अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह बयान करते है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"मेरी उम्मत का प्रत्येक व्यक्ति स्वर्ग में जाए गा, सिवाय उस आदमी के जो अस्वीकार कर दे, पूछा गया कि स्वर्ग में प्रवेष करना कौन अस्वीकार कर देगा? आप ने फरमायाः "जिस ने मेरा आज्ञा पालन किया वह स्वर्ग में प्रवेष करे गा, और जिस ने मेरी अवज्ञा की उस ने स्वर्ग में जाने को अस्वीकार किया।"

और सहीह बुख़ारी में अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"अल्लाह के निकट सब से अधिक नापसन्दीदा -घृणित- लोग तीन हैंः *प्रथमः* हरम में बेदेनी (नास्तिकता) का प्रदर्शन करने वाला, *द्वितीयः* इस्लाम के अन्दर जाहिलियत का मार्ग ढूँढ़ने वाला, *तृतीयः* किसी मुसलमान के अवैध खून बहाने का मुतालबा करने वाला।" (सहीह बुख़ारी)

शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिय्या रहमतुल्लाहि अलैहि फरमाते हैं:

"पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फर्मान **"जाहिलियत का मार्ग"** में पैग़म्बरों के लाए हुए धर्म के विरूध प्रत्येक जाहिलयत का मार्ग सम्मिलित है, चाहे वह सामान्य हो या कुछ लोगों के साथ विशिष्ट हो, यहूद एंव ईसाईयों का हो या मूर्तिपूजकों का, या इनके अतिरिक्त किसी अन्य का।"

और सहीह बुख़ारी में हुज़ैफा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, उन्हों ने फरमाया:

"ऐ क़ारियों की जमाअत! सीधे मार्ग पर गमन रहो, यदि तुम सीधे मार्ग पर रहो गे तो बहुत आगे निकल जााओ गे, और यदि दाहिने बायें मुड़ो गे तो अति पथ-भ्रष्ट हो जाओ गे।"

और मुहम्मद बिन वज़्ज़ाह ने इस प्रकार वर्णन किया है कि हुज़ैफा रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिद में प्रवेश करते और हलक़ों के निकट खड़े हो कर यह फरमाते।

वह अधिक वर्णन करते हैं कि हम से सुफ़्यान बिन उवैनह ने मुजालिद से और मुजालिद ने शअ्बी से और शअ्बी ने

मसरूक़ से वर्णन करते हुए कहा है कि अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमायाः

''बाद मे आने वाला हर वर्ष अपने पिछले वर्षों से अधिक बुरा है, मैं यह नहीं कहता कि फलाँ साल, फलाँ साल से अधिक वर्षा वाला है, और न ही यह कहता हूँ कि फलाँ साल फलाँ साल से अधिक हरा-भरा है, और न ही यह कहता कि हूँ कि फलाँ अमीर, फलाँ अमीर से श्रेष्ठ है, बल्कि वास्तविक बात यह है कि तुम्हारे उलमा और अच्छे लोगों की समाप्ति हो रही है, इस के पश्चात ऐसे लोग पैदा हों गे जो धार्मिक मामलों को अपनी सोच-विचार पर क़यास करें गे, जिस के कारण इस्लाम को ध्वस्त और नष्ट कर दिया जाए गा।''

इस्लाम की व्याख्य

अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿فَإِنْ حَاجُّوكَ فَقُلْ أَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلَّهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ﴾
(آل عمران: ٢٠)

"फिर भी यदि यह आप से झगड़ें तो आप कह दें कि मैं ने और मेरे मानने वालों ने अल्लाह तआला के सामने अपना सिर झुका दिया है।" (सूरत आल-इम्रानः२०)

सहीह मुस्लिम में उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"इस्लाम यह है कि तुम इस बात की गवाही दो कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के पैग़म्बर हैं, और नमाज़ स्थापित करो, ज़कात दो, रमज़ान के रोज़े रखो और सामर्थ्य हो तो अल्लाह के घर -कअ्बा- का हज्ज करो।" (सहीह मुस्लिम)

और सहीह हदीस में अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्फ़ूअन वर्णित है:

"मुसलमान वह है जिस की ज़ुबान और हाथ से दूसरे मुसलमान सुरक्षित रहें।"

और बह्ज़ बिन हकीम से वर्णित है, वह अपने बाप के वास्ते से अपने दादा से वर्णन करते हैं कि उन्हों ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस्लाम के विषय में प्रश्न किया तो आप ने फरमाया:

"इस्लाम यह है कि तुम अपना हृदय अल्लाह को सौंप दो, अपना चेहरा अल्लाह की ओर फेर दो, फर्ज़ नमाज़ें पढ़ो और फर्ज़ ज़कात दो।" इस हदीस को इमाम अहमद ने रिवायत किया है।

अबू क़िलाबा एक शामी (सीरियन) आदमी से वर्णन करते हैं कि उस के बाप ने अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रश्न किया कि इस्लाम क्या है? आप ने फरमाया:

"इस्लाम यह है कि तुम अपना दिल अल्लाह के हवाले कर दो, और मुसलमान तुम्हारी ज़ुबान और तुम्हारे हाथ से सुरक्षित रहें।" फिर उन्होंने प्रश्न

किया कि इस्लाम का कौन सा काम सर्वश्रेष्ठ है? आप ने फरमायाः ईमान। उस ने कहा कि ईमान क्या है? आप ने फरमायाः **"ईमान यह है कि तुम अल्लाह पर, उस के फरिश्तों पर, उस की उतारी हुई पुस्तकों पर, उसके पैग़म्बरों पर और मरने के बाद दुबारा उठाए जाने पर विश्वास रखो।"** (इस हदीस को शैखुल-इस्लाम इब्ने तैमियह ने 'किताबुल-ईमान" के अन्दर उल्लेख किया है और उसके बाद फरमाया कि इसे इमाम अहमद और मुहम्मद बिन नस्र मर्वज़ी ने रिवायत किया है)

अल्लाह तआला के फर्मान ﴿ وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِيناً فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ ﴾ की व्याख्या

अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿ وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِيناً فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ ﴾
(آل عمران:٨٥)

"और जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त कोई अन्य धर्म तलाश करे तो उस का धर्म हरगिज़ स्वीकार नहीं किया जाए गा।" (सूरत-आल इम्रानः८५)

अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह बयान करते हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"क़ियामत के दिन बन्दों के आमाल उपस्थित हों गे, चुनांचे नमाज़ उपस्थित होगी और कहे गी कि ऐ पालनहार! मैं नमाज़ हूँ, अल्लाह तआला फरमाये गाः तू खैर पर है, फिर ज़कात उपस्थित होगी और कहे गी कि ऐ पालनहार ! मैं ज़कात हूँ, अल्लाह तआला फरमाए गाः तू भी खैर पर है, फिर रोज़ा उपस्थित होगा और कहे गा कि ऐ पालनहार! मैं रोज़ा हूँ,

अल्लाह तआला फरमाए गाः तू भी खैर पर है, इस के बाद बन्दे के शेष आमाल इसी प्रकार उपस्थित हों गे और अल्लाह तआला फरमाए गा : तुम सब खैर पर हो, फिर इस्लाम उपस्थित होगा और कहे गा कि ऐ पालनहार! तू सलाम है और मैं इस्लाम हूँ, अल्लाह तआला फरमाए गाः तू भी खैर पर है, आज मैं तेरे ही कारण से पकड़ करूँगा और तेरे ही कारण से प्रदान करूँगा, अल्लाह तआला ने अपनी किताब क़ुर्आन मजीद में फरमायाः

﴿وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنْ الْخَاسِرِينَ﴾

"और जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त कोई अन्य धर्म तलाश करे तो उस का धर्म हरगिज़ स्वीकार नहीं किया जाए गा, और वह आखिरत में घाटा उठाने वालों में से होगा।।" (सूरत-आल इम्रानः८५)

इस हदीस को इमाम अहमद ने रिवायत किया है।

और सहीह मुस्लिम में आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"जिस ने कोई ऐसा काम किया जिस के बारे में हमारा आदेश नहीं है तो वह काम मर्दूद (अस्वीकृत) है।" इस हदीस को इमाम अहमद ने भी रिवायत किया है।

किताबुल्लाह की पैरवी करके उसके अतिरिक्त से निस्पृह –बे नियाज़– होना अनिवार्य है

अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تِبْيَانًا لِكُلِّ شَيْءٍ ﴾ (النحل: ٨٩)

"और हम ने आप पर यह किताब उतारी है जिस में हर चीज़ का स्पष्ट उल्लेख है।" (सूरतुन-नहलः८९)

सुनन नसाई आदि में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ में तौरात का एक पन्ना देखा तो फरमायाः

"ऐ खत्ताब के बेटे! क्या तुम हैरत में पड़े हो! मैं तुम्हारे पास स्पष्ट और उज्जवल शरीअत ले कर आया हूँ, यदि मूसा जीवित होते और तुम मुझे छोड़ कर उन की पैरवी करते तो पथ-भ्रष्ट हो जाते।"

एक दूसरी रिवायत में है:

''यदि मूसा जीवित होते तो उन्हें भी मेरी पैरवी करनी पड़ती।''

यह सुन कर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि:

''मैं अल्लाह से प्रसन्न हूँ उसे अपना पालनकर्ता मान कर, इस्लाम से प्रसन्न हूँ उसे अपना दीन समझ कर और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रसन्न हूँ उन्हें अपना नबी मान कर।''

इस्लाम के दावा से निकल जाने का वर्णन

अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿هُوَ سَمَّاكُمُ الْمُسْلِمِينَ مِنْ قَبْلُ وَفِي هَذَا﴾ (الحج: ٧٨)

"उसी अल्लाह ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है इस क़ुरआन से पहले और इस में भी।"
(सूरतुल-हज्ज:७८)

हारिस अश्अरी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने फरमाया:

"मै तुम्हें उन पाँच बातों का आदेश देता हूँ जिन का अल्लाह तआला ने मुझे आदेश दिया है: हाकिम -शासक- की बात सुनने और उस की पैरवी करने का, जिहाद का, हिज्रत का और मुसलमानों की जमाअत से जुड़े रहने का, क्योंकि जो व्यक्ति जमाअत से बालिश्त बराबर भी दूर हो उस ने अपनी गर्दन से इस्लाम का पट्टा निकाल फेंका, परन्तु यह कि वह जमाअत की ओर पलट आए, और जिस ने जाहिलियत की पुकार लगाई वह

जहन्नमी है।" यह सुन कर एक व्यक्ति ने कहा कि ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! चाहे वह नमाज़ पढ़े और रोज़े रखे? फरमायाः **"हाँ, चाहे वह नमाज़ पढ़े और रोज़ा रखे, अतः ऐ अल्लाह के बन्दो! तुम उस अल्लाह की पुकार लगाओ जिस ने तुम्हारा नाम मुसलमान और मोमिन रखा है।"** इस हदीस को इमाम अहमद और त्रिमिज़ी ने रिवायत किया है, और त्रिमिज़ी ने इसे हसन सहीह कहा है।

और सहीह बुखारी एंव मुस्लिम में हैः

"जो जमाअत से बालिश्त बराबर भी जुदा हुआ, और इसी अवस्था मे मर गया तो उस की मौत जाहिलियत की मौत है।"

तथा सहीह हदीस में है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"क्या जाहिलियत की पुकार लगाई जा रही है और मैं तुम्हारे बीच मौजूद हूँ?"

शैखुल इस्लाम अबुल अब्बास इब्ने तैमिय्या फरमाते हैंः

"इस्लाम और कुरआन के दावा से खारिज हर चीज़, चाहे वह नसब हो या स्वदेश हो, या क़ौम हो या

धर्म हो या तरीक़ा हो, सब जाहिलियत की पुकार में सम्मिलित है, बल्कि जब मुहाजिर और अन्सारी दो सहाबी के बीच झगड़ा हुआ और मुहाजिर ने मुहाजिरों को पुकारा और अन्सारी ने अन्सारियों को आवाज़ दी, तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः **"क्या जाहिलियत की पुकार लगाई जा रही है और मैं तुम्हारे बीच मौजूद हूँ?"** और इस बात से आप बहुत अप्रसन्न हुए।" शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिया का कलाम समाप्त हुआ।

इस्लाम में सम्पूर्ण रूप से प्रवेश करना और उसके अतिरिक्त अन्य धर्मों को त्याग कर देना अनिवार्य है

अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ادْخُلُوا فِي السِّلْمِ كَافَّةً﴾ (البقرة: ٢٠٨)

"ऐ ईमान वालो! इस्लाम में पूरे पूरे प्रवेष हो जाओ।" (सूरतुल बक़रहः२०८)

तथा फरमायाः

﴿أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنُوا بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ﴾ (النساء:٦٠)

"क्या आप ने उन्हें नहीं देखा जिन का दावा तो यह है कि जो कुछ आप पर और जो कुछ आप से पहले उतारा गया उस पर उनका ईमान है।" (सूरतुन-निसाः६०)

तथा अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿إِنَّ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيَعاً لَسْتَ مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ﴾ (الأنعام:١٥٨)

"निःसन्देह जिन लोगों ने अपने धर्म को अलग-अलग कर दिया और गुट-गुट बन गए आप का उन से कोई सम्बन्ध नहीं।" (सूरतुल-अन्आमः१५९)

इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा अल्लाह तआला के इस कथनः

﴿يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ﴾

"जिस दिन कुछ चेहरे चमक रहे होंगे और कुछ काले।"

की व्याख्या में कहते हैंः

"अहले सुन्नत व जमाअत के चेहरे उज्जवल होंगे, और अहले बिद्अत और साम्प्रदायिक लोगों के चेहरे काले हों गे।"

अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है, वह बयान करते हैं कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"मेरी उम्मत पर बिल्कुल वैसा ही समय आए गा जैसा कि बनी इस्राईल पर आया था, यहाँ तक कि यदि उन में किसी ने अपनी माँ के साथ खुल्लम खुल्ला बलात्कार किया होगा तो मेरी उम्मत में भी इस प्रकार का व्यक्ति होगा जो ऐसा करे गा, तथा बनी इस्राईल बहत्तर फिर्कों (दलों) में बट गए थे, किन्तु मेरी यह उम्मत तिहत्तर फिर्कों में बट जाए गी, उन में से एक के अतिरिक्त शेष सब नरकवासी हों गे।" सहाबा ने पूछा कि ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! वह नजात पाने वाला फिर्क़ा कौन होगा? फरमायाः **"वह जो उस मार्ग पर चले जिस मार्ग पर मैं हूँ और मेरे सहाबा हैं।"**

जो मोमिन अल्लाह ताअला से मुलाक़ात की आशा रखता है उसे इस स्थान पर सादिक़ व मस्दूक़ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस विशेष रूप से आप के फर्मान **"जिस तरीक़े पर मैं हूँ और मेरे साथी हैं"** पर ग़ौर करना चाहिए। यह हदीस कितनी बड़ी नसीहत है यदि ज़िन्दा दिलों से इसका वास्ता हो! इस हदीस को इमाम त्रिमिज़ी ने रिवायत किया है, तथा इन्हों ने इसे अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु के वास्ते से रिवायत कर के इसे सहीह कहा है,

किन्तु इस रिवायत में जहन्नम का उल्लेख नहीं है, यह हदीस मुस्नद अहमद और सुनन अबू दाऊद में मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के तरीक़ से वर्णित है, जिस में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह फर्मान है:

"मेरी उम्मत में एक ऐसी क़ौम प्रकट होगी जिन की नसों में यह खाहिशात इस प्रकार घुस जाएं गी, जिस प्रकार पागल कुत्ते के काटने से पैदा होने वाली बीमारी काटे हुए व्यक्ति की नसों में प्रवेश कर जाती है, फिर उस की शरीर का कोई नस और कोई जोड़ उस के प्रभाव से सुरक्षित नहीं रहता।"

इस से पहले पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह फर्मान उल्लिखित हो चुका है कि:

"इस्लाम में जाहिलियत का तरीक़ा ढूँढ़ने वाला" (अल्लाह के निकट तीन सब से नापसन्दीदा लोगों में से है।)

बिद्अत बड़े-बड़े गुनाहों से भी अधिक सख्त है

अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿إِنَّ اللَّهَ لا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ﴾ (النساء:٤٨).

''अल्लाह तआला अपने साथ शिर्क किए जाने को क्षमा नहीं करेगा, और इस के अतिरिक्त जिसे चाहे गा क्षमा कर दे गा।'' (सूरतुन-निसाः४८)

तथा अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِباً لِيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ﴾ (الأنعام:١٤٤)

''और उस से बढ़ कर अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह तआला पर बिना किसी प्रमाण के झूठा आरोप लगाता है।'' (सूरतुल अन-आमः१४४)

तथा अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿لِيَحْمِلُوا أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَمِنْ أَوْزَارِ الَّذِينَ يُضِلُّونَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ أَلا سَاءَ مَا يَزِرُونَ﴾ (النحل:٢٥)

"ताकि क़ियामत के दिन यह लोग अपने पूरे बोझ के साथ ही उन के बोझ के भी भागी दार हों जिन्हें अनजाने से पथ-भ्रष्ठ करते रहे, देखो तो कैसा बुरा बोझ उठा रहे हैं।" (सूरतुन-नहलः२५)

और सहीह बुख़ारी में है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़वारिज के विषय में फरमायाः

"उन्हे जहाँ भी पाओ क़त्ल कर दो, यदि मैं ने उन्हें पाया तो क़ौमे ऑद के क़त्ल के समान क़त्ल करूँगा।" (सहीह बुखारी एंव सहीह मुस्लिम)

तथा सहीह (मुस्लिम) में है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अत्याचारी शासकों को क़त्ल करने से रोका है जब तक वह नमाज़ पढ़ते हों।"

और जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि एक आदमी ने ख़ैरात दिया, उस के बाद लोगों ने ख़ैरात देना आरम्भ कर दिया तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"जिस ने इस्लाम में कोई अच्छा तरीक़ा निकाला तो उसे इस का अज्र -बदला- मिले गा और उन लोगों का अज्र भी जो इसके बाद उस पर अमल करें गे, किन्तु अमल करने वालों के अज्र में कोई कमी नहीं होगी, और जिस ने इस्लाम में कोई बुरा तरीक़ा अविष्कार किया तो उस पर इस का गुनाह होगा और उन लोगों का भी गुनाह होगा जो इस पर अमल करें गे, किन्तु इन अमल करने वालों के गुनाह में कोई कमी नहीं होगी।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

तथा सहीह मुस्लिम में अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु के द्वारा इसी के समान एक अन्य हदीस वर्णित है जिसके शब्द यह हैं:

"जिस ने किसी हिदायत -मार्गदर्शन- की ओर बुलाया ... औरः जिस ने किसी गुमराही की ओर बुलाया।"

अल्लाह तआला बिद्अती की तौबा स्वीकार नहीं करता

यह बात अनस रज़ियल्लाहु अन्हु की (मरफूअ्) हदीस और हसन बसरी की मुर्सल हदीस से प्रमाणित है, और इब्ने वज़्ज़ाह ने अय्यूब से बयान किया है कि उन्हो ने फरमाया किः हमारे बीच एक आदमी था जो कोई असत्य विचार रखता था, फिर उस ने वह विचार त्याग दिया, तो मैं मुहम्मद बिन सीरीन के पास आया और कहा आप को ज्ञात हुआ कि फलाने ने अपना विचार त्याग दिया?

उन्हों ने कहाः अभी देखो तो सही वह किस दिशा में जाता है, ऐसे लोगों के संबन्ध में जो हदीस आई है उसका यह अन्तिम भाग उसके प्रारम्भिक भाग से अधिक सख्त है कि **"वह इस्लाम से निकल जाएं गे, फिर उसकी ओर पुनः वापस नहीं लौटैं गे।"**

इमाम अहमद बिन हम्बल -रहमतुल्लाहि अलैहि- से इस का अर्थ पूछा गया तो आप ने फरमायाः ऐसे आदमी को तौबा की तौफीक़ नहीं होती।"

अल्लाह तआला के फर्मान ﴿ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ ﴾ ﴿ تُحَاجُّونَ فِي إِبْرَاهِيمَ... وَمَا كَانَ مِنْ الْمُشْرِكِينَ ﴾ का वर्णन

अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تُحَاجُّونَ فِي إِبْرَاهِيمَ وَمَا أُنْزِلَتْ التَّوْرَاةُ وَالإِنجِيلُ إِلاَّ مِنْ بَعْدِهِ أَفَلاَ تَعْقِلُونَ هَاأَنْتُمْ هَؤُلاَءِ حَاجَجْتُمْ فِيمَا لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَاجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لاَ تَعْلَمُونَ مَا كَانَ إِبْرَاهِيمُ يَهُودِيًّا وَلاَ نَصْرَانِيًّا وَلَكِنْ كَانَ حَنِيفًا مُسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنْ الْمُشْرِكِينَ﴾

(آل عمران:٦٥-٦٧)

"ऐ अहले किताब (यहूद एंव नसारा)! तुम इब्राहीम के विषय में क्यों झगड़ते हो? हालांकि तौरात और इन्जील तो उनके बाद उतरी हैं, क्या फिर भी तुम नहीं समझते? सुनो! तुम उस में झगड़ चुके हो जिस का तुम्हें ज्ञान था, फिर तुम उस बात में क्यों झगड़ते हो जिस का तुम्हें ज्ञान नहीं, और अल्लाह

तआला जानता है, और तुम नहीं जानते, इब्राहीम न तो यहूदी थे न ईसाई, बल्कि वह तो एकांत और शुद्ध मुसलमान थे, और मुश्रिक -अनेकेश्वरवादी- नहीं थे।'' (सूरत आल-इम्रानः६५-६७)

और अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿وَمَنْ يَرْغَبُ عَنْ مِلَّةِ إِبْرَاهِيمَ إِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهُ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ﴾
(البقرة:١٣٠)

''और इब्राहीम के धर्म से वही मुँह मोड़े गा जो मूर्ख होगा, हम ने तो उन्हें दुनिया में भी चुनित बनाया था और आख़िरत में भी वह सदाचारियों में से हैं।'' (सूरतुल-बक़रहः१३०)

इस विषय में खवारिज से संबंधित हदीस है जो गुज़र चुकी है, तथा सहीह हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

''अबू फलाँ के आल मेरे दोस्त नहीं, मेरे दोस्त मुत्तक़ी (संयमी, ईशभय रखने वाले) लोग हैं।''

और सहीह हदीस में अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से

वर्णन किया गया कि कुछ सहाबा ने कहा कि मैं गोश्त नहीं खाऊंगा, दूसरे ने कहा कि मैं रात भर नमाज़ पढ़ूँ गा और सोऊँगा नहीं, तीसरे ने कहा कि मैं औरतों के समीप नहीं जाऊँगा, चौथे ने कहा कि मैं लगातार रोज़ा रखूंगा और नागा नहीं करूँगा। इन की बातें सुन कर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"किन्तु मेरा हाल यह है कि मैं रात को नमाज़ पढ़ता हूँ और सोता भी हूँ, रोज़ा रखता हूँ और नागा भी करता हूँ, और पत्नियों के पास भी जाता हूँ और गोश्त भी खाता हूँ, तो जिस ने मेरी सुन्नत से मुँह मोड़ा वह मुझ से नहीं।"

गौर कीजिए कि जब कुछ सहाबा ने इबादत के उद्देश्य से दुनिया से कट जाने की इच्छा प्रकट किया तो उनके बारे में यह कठोर बात कही गई और उनके काम को सुन्नत से मुँह मोड़ना बताया गया, तो फिर इनके अतिरिक्त बिद्अतों के बारे में और सहाबा के बाद अन्य लोंगों के बारे में आप का क्या विचार है?

अल्लाह तआला के फर्मान ﴿ فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفاً﴾ का वर्णन

अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفاً فِطْرَتَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا لا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللَّهِ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لا يَعْلَمُونَ﴾ (الروم:٣٠)

"आप एकांत हो कर अपना मुँह दीन की ओर कर लें, अल्लाह तआला की वह फित्रत (प्रकृति) जिस पर उस ने लोगों को पैदा किया है, अल्लाह की सृष्टि को बदलना नहीं है, यही सीधा दीन है, किन्तु अधिकांश लोग नहीं जानते।" (सूरतुर्रूमः३०)

तथा फरमायाः

﴿وَوَصَّى بِهَا إِبْرَاهِيمُ بَنِيهِ وَيَعْقُوبُ يَا بَنِيَّ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَى لَكُمُ الدِّينَ فَلا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ﴾ (البقرة:١٣٢)

''और इसी इब्राहीमी धर्म की वसीयत इब्राहीम ने और याक़ूब ने अपनी अपनी संतान को की कि ऐ मेरे बेटो! अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए इस धर्म को पसन्द कर लिया है, तो सावधन! तुम मुसलमान हो कर ही मरना।'' (सूरतुल बक़रहः१३२)

तथा अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿ثُمَّ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفاً وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ﴾ (النحل:١٢٣).

''फिर हम ने आप की ओर यह वह्य भेजी कि आप मिल्लते-इब्राहीम का अनुसरण कीजिए जो कि मुवह्हिद (ऐकेशरवादी) थे और मुश्रिकों में से न थे।'' (सूरतुन-नहलः१२३)

इब्ने मसूऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

''प्रत्येक नबी के अंबिया में से कुछ दोस्त होते हैं, और उन में से मेरे दोस्त इब्राहीम हैं, जो मेरे बाप और मेरे पालनहार के ख़लील (दोस्त) हैं'' इस के बाद आप ने यह आयत पढ़ीः

﴿إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لَلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ وَهَذَا النَّبِيُّ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ﴾

"सब से अधिक इब्राहीम से निकट वह लोग हैं जिन्हों ने उनका अनुसरण किया, और यह नबी, और वह लोग जो ईमान लाए, और मोमिनों का दोस्त अल्लाह है।" (सूरत आल इम्रानः६८)

इस हदीस को त्रिमिज़ी ने रिवायत किया है।

अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, वह बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"अल्लाह तआला तुम्हारे शरीर और तुम्हारे धन नहीं देखता, बल्कि तुम्हारे दिल और तुम्हारे कार्य देखता है।"

बुख़ारी एंव मुस्लिम में इब्ने मसूऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"मैं हौज़े-कौसर पर तुम सब से पहले उपस्थित रहूँगा, मेरे पास मेरी उम्मत के कुछ लोग पेश होंगे, यहाँ तक कि जब मैं उन्हें देने के लिए बढ़ूँ गा तो

वह मुझ से रोक दिए जाएं गे, मैं कहूँ गा ऐ मेरे पालनहार! यह तो मेरी उम्मत के लोग हैं, मुझ से कहा जाए गा कि आप को ज्ञात नहीं कि आप के बाद इन्हों ने क्या क्या बिद्अते अविष्कार की थीं।"

और बुखारी एंव मुस्लिम में अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"मेरी इच्छा थी कि हम अपने भाईयों को देख लेते" सहाबा ने कहा कि ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! क्या हम आप के भाई नहीं? फरमायाः **"तुम मेरे असहाब (साथी) हो, और मेरे भाई वह हैं जो अब तक नहीं आए।"** सहाबा ने कहा कि ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! आप की उम्मत के जो लोग अभी तक पैदा नहीं हुए आप उन्हें कैसे पहचान लें गे? फरमायाः **"क्या अति श्वेत और काले घोड़ों के बीच अगर किसी का चमकदार माथा और सफेद पाँव वाला घोड़ा हो तो क्या वह अपना घोड़ा नहीं पहचान ले गा?"** उन्हों ने उत्तर दियाः हाँ, क्यों नहीं, आप ने फरमायाः **"मेरी उम्मत भी क़ियामत के दिन इस प्रकार उपस्थित होगी कि वुज़ू के प्रभाव से उनके चेहरे और अन्य**

वुज़ू के स्थान चमक रहे हों गे, और मैं हौज़े कौसर पर पहले से उन की प्रतीक्षा कर रहा हूँगा, सुनो! क़ियामत के दिन कुछ लोग मेरे हौज़े-कौसर से ऐसे ही धुत्कार दिए जाएं गे जिस प्रकार पराया ऊँट धुत्कार दिया जाता है, मैं उन्हे आवाज़ दूँगा कि सुनो, इधर आओ, तो मुझ से कहा जाए गा कि यह वह लोग हैं जिन्हों ने आप के बाद दीन में परिवर्तन की थी, मैं कहूँगा कि फिर तो दूर हो जाओ, दूर हो जाओ।''

और सहीह बुखारी में है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

''जिस समय मैं हौज़े-कौसर पर रहूँगा, एक टोली प्रकट होगी, जब मैं उन्हें पहचान लूँगा तो मेरे और उनके बीच से एक आदमी निकले गा और उन से कहे गाः इधर आओ, मैं पूछूँ गाः कहाँ? वह कहे गाः अल्लाह की क़सम जहन्नम की ओर, मैं कहूँगा : इनका क्या मामला है? वह कहे गाः यह वह लोग हैं जो आप के बाद दीन से फिर गए थे। फिर इसके बाद एक अन्य टोली प्रकट होगी -इस टोली के बारे में भी आप ने वही बात की जो पहली टोली के बारे

में कहा था- इस के बाद आप ने फरमायाः इन में से मोक्ष प्राप्त करने वालों की संख्या भटके हुए ऊँटों के समान बहुत ही कम होगी।"

और बुखारी एंव मुस्लिम में इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की हदीस है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

उस समय मैं भी वही कहूँगा जो अल्लाह के नेक (सदाचारी) बन्दे -ईसा अलैहिस्सलाम- ने कहा थाः

﴿وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيداً مَا دُمْتُ فِيهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتَ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ وَأَنْتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ﴾ (المائدة: ١١٧).

"जब तक मैं उन के बीच रहा उन पर गवाह रहा, फिर जब तू ने मुझ को उठा लिया तो तू ही उनसे अवगत रहा, और तू हर चीज़ की पूरी सूचना रखता है।" (सूरतुल-माईदाः११७)

तथा बुखारी एंव मुस्लिम में इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरफूअन रिवायत हैः

''हर बच्चा इस्लाम की फित्रत पर पैदा होता है, फिर उस के माँ-बाप उसे यहूदी या ईसाई या मजूसी बना देते हैं, जिस प्रकार कि चौपाया सम्पूर्ण -बे ऐब- चौपाया जनता है, क्या तुम उन में से कोई चौपाया ऐसा पाते हो जिस के कान कटे फटे हों, यहाँ तक कि तुम ही स्वयं उस के कान चीर-काट देते हो। इस के बाद अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह आयत पढ़ी:

﴿فِطْرَتَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا﴾ (الروم:٣٠)

''अल्लाह की वह फित्रत जिस पर उस ने लोगों को पैदा किया।'' (सूरतुर्रूमः३०)

हुज़ैफा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं किः

''लोग पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ख़ैर -भलाई- के विषय में प्रश्न करते थे, और मैं आप से शर्र -बुराई- के बारे में पूछता था इस डर से कि मैं उसका शिकार न हो जाऊँ। मैं ने कहा कि ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! हम जाहिलियत और शर्र में पड़े हुए थे, फिर अल्लाह तआला ने हमें ख़ैर -भलाई- की नेमत से सम्मानित किया, तो क्या इस खैर के

बाद भी फिर कोई शर्र होगा? फरमायाः **"हाँ"** मैं ने कहाः क्या इस शर्र के बाद फिर खैर का ज़माना आए गा? फरमायाः **"हाँ, किन्तु इस में खोट होगी"**, मैं ने कहा कि कैसी खोट होगी? आप ने फरमायाः **"कुछ लोग ऐसे होंगे जो मेरी सुन्नत और हिदायत को छोड़ कर दूसरों का तरीक़ा अपनाएं गे, तुम्हें उन के कुछ काम उचित मालूम होंगे और कुछ काम अनुचित"**, मैं ने कहा क्या इस खैर के बाद फिर शर्र प्रकट होगा? फरमायाः **"हाँ, भयानक फित्ने और नरक की ओर बुलाने वाले लोग पैदा होंगे, जो उन की सुने गा उसे नरक में झोंक देंगे"**, मैं ने कहा ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! आप हमें उनके औसाफ बता दें, फरमायाः **"वह हम में से होंगे और हमारी ही भाषा में बात करें गे"**, मैं ने कहा ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! यदि यह समय मुझे मिल जाए तो आप मुझे क्या आदेश देते हैं? फरमायाः **"मुसलमानों की जमाअत और उनके इमाम के साथ जुड़े रहना"**, मैं ने कहा कि अगर उस समय मुसलमानों की कोई जमाअत और उनका इमाम न हो तो क्या करूँ? फरमायाः **"फिर इन सभी फिर्क़ों से अलग-थलग रहना, चाहे**

तुम्हें किसी पेड़ की जड़ से चिमटना पड़े यहाँ तक कि इसी हालत में तुम्हारी मृत्यु हो जाए।''

इस हदीस को बुखारी एंव मुस्लिम ने रिवायात किया है, किन्तु मुस्लिम की रिवायत में इतनी वृद्धि हैः

''इसके बाद क्या होगा? फरमायाः **''फिर दज्जाल प्रकट होगा, उस के साथ एक नहर और एक जहन्नम होगी, जो उस की जहन्नम में प्रवेष करेगा उसका अज्र साबित हो जाए गा और गुनाह माफ हो जाएं गे, और जो उस की नहर में प्रवेष करे गा उस का गुनाह वाजिब और अज्र समाप्त हो जाए गा''**, मैं ने कहा फिर इस के बाद क्या होगा? फरमायाः **''इसके बाद क़ियामत आ जाए गी।''**

अबुल-आलियह फरमाते हैंः

''इस्लाम की शिक्षा प्राप्त करो, और जब इस्लाम की शिक्षा प्राप्त कर लो तो इस से मुँह न मोड़ो, और सीधे मार्ग पर चलते रहो, वही इस्लाम है, और इसे छोड़ कर दायें बायें न मुड़ो, और अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत पर अमल

करते रहो, और असत्य और भ्रष्ट अक़ाइद और बिदअतों के निकट न जाओ।''

अबुल-आलियह -रहमतुल्लाहि अलैहि- के इस कथन पर ग़ौर करो, कितना ऊँचा कथन है, और उनके उस समय को पहचानो जिस में वह इन भ्रष्ट अक़ाईद एंव बिदअतों से सावधान कर रहें हैं कि जो इन गलत अक़ाइद एंव बिदअतों में पड़ जाए वह मानो कि इस्लाम से फिर गया, और किस प्रकार उन्हों ने इस्लाम की व्याख्या सुन्नत -हदीस- से की है, और बड़े-बड़े ताबईन और उनके विद्वानों पर किताब व सुन्नत की रेखा से निकल जाने का भय प्रतीक कर रहें हैं। अबुल आलियह के कलाम पर ग़ौर करने से आप के लिए अल्लाह तआला के इस फर्मान का अर्थ स्पष्ट हो जाए गाः

﴿إِذْ قَالَ لَهُ رَبُّهُ أَسْلِمْ قَالَ أَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ﴾ (البقرة: ١٣١)

''जब उन के पालनहार ने उन से कहा कि आज्ञाकारी हो जाओ, तो उन्हों ने कहा कि मैं अल्लाह रब्बुल-आलमीन का आज्ञाकारी हो गया।''

(सूरतुल-बक़रहः १३१)

और यह फर्मान:

﴿وَوَصَّى بِهَا إِبْرَاهِيمُ بَنِيهِ وَيَعْقُوبُ يَا بَنِيَّ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَى لَكُمُ الدِّينَ فَلا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ﴾
(البقرة:١٣٢)

"इसी बात की वसीयत इब्राहीम ने और याकूब ने अपनी अपनी संतान को की कि ऐ मेरे बेटो! अल्लाह ने तुम्हारे लिए इस धर्म को पसन्द कर लिया है, तो तुम मुसलमान हो कर ही मरना।"
(सूरतुल-बक़रहः १३२)

और यह फर्मान:

﴿وَمَنْ يَرْغَبُ عَنْ مِلَّةِ إِبْرَاهِيمَ إِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهُ﴾
(البقرة:١٣٠)

"और इब्राहीम के धर्म से वही मुँह मोड़े गा जो मूर्ख होगा।" (सूरतुल-बक़रहः१३०)

इसी प्रकार की और भी मूल बातें ज्ञात होंगी जो असलुल-उसूल (आधारशिला) हैं और जिन से लोग निश्चेत हैं। अबुल-आलियह के कथन पर ग़ौर करने से इस अध्याय में वर्णित हदीसों और इन जैसी अन्य हदीसों

का भी अर्थ स्पष्ट हो जाए गा, लेकिन जो मनुष्य यह और इन जैसी अन्य आयतों और हदीसों को पढ़ कर गुज़र जाए और इस बात से सन्तुष्ट हो कि इन खतरों का वह शिकार नहीं होगा, और सोचे कि इस का संबंध ऐसे लोगों से है जो कभी थे और अब समाप्त हो गए, तो यह व्यक्ति भी अल्लाह तआला की पकड़ से निडर है, और अल्लाह की पकड़ से वही लोग निडर होते हैं जो घाटा उठाने वाले होते हैं।

और अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक लकीर खींची और फरमायाः यही अल्लाह का सीधा मार्ग है, फिर उस लकीर के दायें बायें कई लकीरें खींचीं और फरमायाः यह ऐसे मार्ग हैं जिन में से हर मार्ग पर शैतान बैठा हुआ है और अपनी ओर बुला रहा है, इस के बाद आप ने इस आयत की तिलावत कीः

“और यही मेरा सीधा मार्ग है, तो तुम इसी पर चलो, और दूसरे मार्गों पर मत चलो कि वह तुम्हें अल्लाह के मार्ग से अलग कर दें गे, इसी का अल्लाह तआला ने तुम को ताकीदी आदेश दिया है

ताकि तुम परहेज़गार (ईशभय रखने वाले) बनो।"

(सूरतुल-अनआमः १५३)

इस हदीस को इमाम अहमद और नसाई ने रिवायत किया है।

इस्लाम की अजनबियत और गुरबा (अजनबियों) की विशेषता

अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿فَلَوْلاَ كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِن قَبْلِكُمْ أُوْلُواْ بَقِيَّةٍ يَنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الأَرْضِ إِلاَّ قَلِيلاً مِّمَّنْ أَنجَيْنَا مِنْهُمْ﴾ (هود١١٦)

"पस क्यों न तुम से पहले लोगों में खैर वाले हुए जो धरती पर दंगा फैलाने से रोकते, सिवाय उन थोड़े लोगों के जिन्हें हम ने उन में से नजात दी थी।" (सूरत हूदः११६)

और अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से मरफूअन वर्णित है:

"इस्लाम अजनबियत की अवस्था में आरम्भ हुआ था, और शीघ्र ही पहले ही के समान अजनबी हो जाए गा, तो शुभ सूचना हो गुरबा (अजनबियों) के लिए।"

इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है, तथा इसे इमाम अहमद ने अब्दुल्लाह बिन मसूऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के द्वारा रिवायत किया है, जिस में यह वृद्धि है:

> ''कहा गया कि ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! गुरबा कौन लोग हैं? फरमाया: **''अल्लाह के मार्ग में अपने वतन व खानदान को छोड़ देने वाले लोग।''**

और दूसरी रिवायत में है:

> **''गुरबा वह लोग हैं जो उस समय नेक और सदाचारी होंगे जब अधिकांश लोग बिगड़ चुके होंगे।''**

और इस हदीस को इमाम अहमद ने सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है, और इस में यह है:

> **''पस उस समय खुशखबरी हो गुरबा के लिए जब लोगों के अन्दर फसाद व बिगाड़ आ जाए गा।''**

तथा इमाम त्रिमिज़ी ने कसीर बिन अब्दुल्लाह के वास्ते से रिवायत किया है, वह अपने बाप के वास्ते से अपने दादा से रिवायत करते हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

''पस खुशखबरी है उन गुरबा के लिए जो मेरी उन सुन्नतों का सुधार करें गे जिन को लोग बिगाड़ चुके हों गे।''

और अबू उमैय्या से रिवायत है, वह कहते हैं कि मैं ने अबू सअ्लबा खुशनी रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि इस आयत के बारे में आप क्या कहते हैं:

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنفُسَكُمْ لَا يَضُرُّكُم مَّن ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ﴾ (المائدة:١٠٥)

''ऐ ईमान वालो तुम अपनी चिन्ता करो, यदि तुम सीधे मार्ग पर चलो गे तो जो पथ-भ्रष्ट है उस से तुम्हारा कोई नुक्सान नहीं होगा।'' (सूरतुल-माईदा:१०५)

तो अबू सअ्लबह ने कहा कि अल्लाह की क़सम! इस आयत के बारे में मैं ने सब से अधिक जानकार अर्थात अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रश्न किया था तो आप ने फरमाया:

''बल्कि तुम आपस में एक दूसरे को भलाई का आदेश देते और बुराई से रोकते रहो, यहाँ तक कि जब यह देख लो कि कन्जूसी का पालन किया जा रहा है, खाहिशात की पैरवी की जा रही है, दुनिया

को प्रधानता दी जा रही है, और हर व्यक्ति अपने विचार धारा पर मगन है, तो अपनी चिन्ता करो, और जन साधारण की चिन्ता अपने मन से निकाल दो, क्योंकि तुम्हारे बाद ऐसे दिन आने वाले हैं जिन में दीन पर धैर्य करने वाला आग का अंगारा पकड़ने वाले के समान होगा और उन में अमल करने वाले को ऐसे पचास आदमियों के बराबर अज्र मिले गा जो तुम्हारे ही जैसा अमल करने वाले हों। हम ने कहा कि क्या हम में से पचास आदमी या उन में से पचास आदमी? तो आप ने फरमायाः **"बल्कि तुम में से।"** इस हदीस को अबू दाऊद और त्रिमिज़ी ने रिवायत किया है।

इब्ने वज़्ज़ाह ने इसी अर्थ की हदीस इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के तरीक़ से रिवायत की है जिस के शब्द यह हैंः

"तुम्हारे बाद ऐसे दिन आयें गे जिन में धैर्य करने वाले और आज तुम जिस दीन पर हो उस पर जमे रहने वाले को तुम्हारे पचास आदमियों के बराबर पुण्य मिले गा।"

इसके बाद इब्ने वज़्ज़ाह ने फरमाया कि हम से मुहम्मद बिन सईद ने बयान किया, उन्हों ने कहा कि हम से असद

ने बयान किया, उन्हों ने कहा कि हम से सुफ़्यान बिन उवैना ने असलम बसरी से और उन्हों ने हसन के भाई सईद से रिवायत की, वह मरफ़ूअन रिवायत करते हैं, मैं ने सुफ़्यान से कहा क्या सईद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मरफ़ूअन रिवायत करते हैं? तो उन्हों ने कहा हाँ, कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"आज तुम अपने पालनहार के शुद्ध और स्पष्ट मार्ग पर हो, भलाई का आदेश देते हो, बुराई से रोकते हो, और अल्लाह के मार्ग में जिहाद करते हो, अभी तक तुम्हारे अन्दर दो नशे प्रकट नहीं हुए हैं, एक जिहालत का नशा और दूसरा जीवन से प्यार का नशा, और शीघ्र ही तुम इस हालत से फिर जाओ गे, तब न तो भलाई का आदेश दो गे, न बुराई से रोको गे, और न ही अल्लाह के मार्ग में जिहाद करो गे, और तुम्हारे अन्दर दोनों नशे प्रकट हो जाएं गे, उस समय किताब एंव सुन्नत पर जमे रहने वाले को पचास आदमियों के बराबर पुण्य मिलेगा", पूछा गया क्या उनके पचास आदमी? आप

ने फरमायाः **''नहीं बल्कि तुम्हारे पचास आदमियों के बराबर।''**

इब्ने वज़्ज़ाह ने एक दूसरी सनद से मुआफरी से रिवायत किया है, वह बयान करते हैं कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

''खुशखबरी है उन गुरबा के लिए कि जब किताबुल्लाह को छोड़ दिया जाए गा तो वह उस पर अमल करें गे और जब सुन्नत की रोशनी बुझा दी जाए गी तो वह उस पर अमल कर के ज़िन्दा करें गे।''

बिदअतों पर चेतावनी

इर्बाज़ बिन सारियह रज़ियल्लाहु अन्हु से विर्णत है, वह बयान करते हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें एक बड़ी ही प्रभावशाली नसीहत की, जिस से हमारे दिल काँप उठे और आँखे आँसू बहाने लगीं, हम ने कहा ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! यह तो अल-विदाई नसीहत जान पड़ती है, तो आप हमें वसीयत कीजिए, आप ने फरमायाः

"मैं तुम्हें अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल से डरने और अमीर की बात सुनने और मानने की वसीयत करता हूँ, भले ही कोई दास तुम्हारा अमीर -शासक- बन जाए, और तुम में से जो व्यक्ति जीवित रहे गा वह बहुत मतभेद देखे गा, ऐसी अवस्था में तुम मेरी सुन्नत और मेरे बाद हिदायत से सम्मानित (मार्ग दर्शित) खुलफाये-राशिदीन का तरीक़ा अपनाओं और उसे दृढ़ता से थामे रहो, और दीन में नयी अविष्कारित बिदअतों से बचो, क्योंकि हर बिदअत पथ-भ्रष्टा है।" इस हदीस को इमाम त्रिमिज़ी ने रिवायत किया है और इसे हसन कहा है।

और हुज़ैफा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, उन्हों ने फरमायाः

"हर वह इबादत जिसे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम ने इबादत न समझा हो उसे तुम भी इबादत न समझो, क्योंकि उन्हों ने बाद में आने वालो के लिए किसी बात की गुनजाइश नहीं छोड़ी है, अतः ऐ क़ारियों की जमाअत! अल्लाह तआला से डरो और अपने असलाफ -पूर्वजों- के तरीक़े पर गमन रहो।" इस को इमाम अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

और इमाम दारमी कहते हैं कि हमें हकम बिन मुबारक ने सूचना दी, हकम बिन मुबारक कहते हैं कि हम से अम्र बिन यह्या ने बयान किया, अम्र बिन यह्या कहते हैं कि मैं ने अपने बाप से सुना, वह अपने बाप से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने फरमायाः हम नमाज़े फज्र से पहले अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के द्वार पर बैठ जाते और जब वह घर से निकलते तो उन के साथ मस्जिद रवाना होते, एक दिन की बात है कि अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहु अन्हु आए और कहा क्या अबू अब्दुर्रहमान (अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद) निकले नहीं? हम ने

उत्तर दियाः नहीं, यह सुन कर वह भी हमारे साथ बैठ गए, यहाँ तक कि इब्ने मस्ऊद बाहर निकले, और हम सब उनकी ओर खड़े हो गए, तो अबू मूसा अश्अरी उन से सम्बोधित हुए और कहाः ऐ अबू अब्दुर्रहमान! मैं अभी अभी मस्जिद में एक नयी बात देख कर आ रहा हूँ, हालाँकि जो बात मैं ने देखी है वह अल्हमदुलिल्लाह ख़ैर ही है। इब्ने मस्ऊद ने कहा कि वह कौन सी बात है? अबू मूसा अश्अरी ने कहा कि अगर ज़िन्दगी रही तो शीघ्र ही आप भी देख लें गे, कहाः वह बात यह है कि कुछ लोग नमाज़ की प्रतीक्षा में मस्जिद के भीतर हलक़े बनाए बैठे हैं, उन सब के हाथों में कंकरियाँ हैं, और हर हलक़ा में एक आदमी नियुक्त है जो उन से कहता है कि सौ बार अल्लाहु अक्बर कहो, तो सब लोग सौ बार अल्लाहु अक्बर कहते हैं, फिर कहता है कि सौ बार ला-इलाहा-इल्लल्लाह कहो, तो सब लोग सौ बार ला-इलाहा-इल्लल्लाह कहते हैं, फिर कहता है कि सौ बार सुब्हानलल्लाह कहो, तो सब लोग सौ बार सुब्हानल्लाह कहते हैं। इब्ने मस्ऊद ने कहा कि फिर आप ने उन से क्या कहा? अबू मूसा ने जवाब दिया कि आप के विचार की प्रतीक्षा में मैं ने उन से कुछ नही कहा, इब्ने मस्ऊद ने फरमाया कि आप ने उन से यह क्यों न कह दिया कि

अपने अपने गुनाह शुमार करो, और फिर इस बात का ज़िम्मा ले लेते कि उन की कोई भी नेकी नष्ट नहीं होगी।

यह कह कर इब्ने मस्ऊद मस्जिद की ओर रवाना हुए और हम भी उन के साथ चल पड़े, मस्जिद पहुँच कर इब्ने मस्ऊद उन हलक़ों में से एक हलक़ा के पास खड़े हुए और फरमायाः तुम लोग क्या कर रहें हो? उन्हों ने जवाब दिया कि ऐ अबू अब्दुर्रहमान! यह कंकरियाँ हैं जिन पर हम तक्बीर, तह्लील और तस्बीह गिन रहे हैं, इब्ने मस्ऊद ने फरमायाः इसके बजाए तुम अपने गुनाह गिनो और मैं इस बात का ज़िम्मा लेता हूँ कि तुम्हारी कोई भी नेकी नष्ट नहीं होगी, तुम्हारी खराबी हो ऐ उम्मते मुहम्मद! कि अभी तो तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा अधिक संख्या में उपस्थित हैं, अभी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के छोड़े हुए कपड़े नहीं फटे, आप के बर्तन नहीं टूटे और तुम इतनी जल्दी तबाही के शिकार हो गए, क़सम है उस ज़ात की जिस के हाथ में मेरी जान है! तुम या तो एक ऐसी शरीअत पर चल रहे हो जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीअत से -नऊज़ो बिल्लाहि- श्रेष्ठ है, या गुमराही (पथ-भष्टता) का द्वार खोल रहे हो। उन्हों ने कहा कि ऐ अबू

अब्दुर्रहमान! अल्लाह की क़सम इस काम से खैर व भलाई के सिवाय हमारा कोई और उद्देश्य न था, इब्ने मस्ऊद ने फरमायाः **ऐसे कितने खैर के आकांक्षी हैं जो खैर तक कभी पहुँच ही नहीं पाते,** चुनाँचे अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम से एक हदीस बयान फरमाई है कि एक क़ौम ऐसी होगी जो क़ुरआन पढ़े गी, किन्तु क़ुरआन उन के गले से नीचे नहीं उतरे गा। अल्लाह की क़सम! क्या पता कि उन में से अधिकतर शायद तुम्हीं में से हों।

यह बातें कह कर इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु उनके पास से वापस चले आए। अम्र बिन सल्मह रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि इन हलक़ों के अधिकांश लोगों को हम ने देखा कि नहरवान की लड़ाई में वह खवारिज के साथ-साथ हम से नेज़ा ज़नी कर रहे थे।

अल्लाह तआला ही सहायक और सहयोगी है, और उसी पर हमारा भरोसा है।

وصلى الله وسلم على سيدنا محمد وعلى آله وصحبه أجمعين.

अनुवादक

(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)*

atazia75@gmail.com